18-1-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

जब बेहद का बाप आते है, वो आकर रूहों को साथ रिहान करते है। बच्चों को समझाते है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। अभी आत्माओं को बाप समझाते है। वो है परम आत्मा माना परमात्मा। उनका नाम भी आत्मा है। परन्तु जनम मरण रहित है। इसलिये परम अर्थात सुप्रीम ऊंच तें ऊंच गाया हुआ है। बाप को 5, 7 बच्चे होंगें तो बाप को सर्व व्यापी थोड़ेई कहेंगें। ऐसे पत्थर बुधी मनुष्य हो पड़े है जो इतना भी समझते नही है। ओ गाड फादर भी कहते है, फिर सर्वव्यापी कहना कितना मूर्खता है। भारत तो स्वर्ग का मालिक था। विश्व का मालिक था। और कोई धर्म नही था। इन देवताओं का ही राज्य था। थोड़ा मनुष्य रहते थे। फिर वृधी होती है। तो आत्मायें कहां सें आती है? आत्मायें रहती है शान्तीधाम में। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्ती। फिर आर्गन्स सें पार्ट बजाना पड़ता है। आत्मा कहती है ओम शान्ती। अर्थात अहम आत्मा शान्त स्वरूप हूं। मनुष्य ओमशान्ती का भी अर्थ नही समझते है। आत्मा कहती है। मै शान्त स्वरूप हूं यहां पार्ट बजाने आई हूं। शान्ती का हार गलें में पड़ा है: ढूंढते है बाहर। मन बुधी तो आत्मा के आर्गन्स है। आत्मा कैसे कह सकती मै अशान्त हूं। परन्तु ज्ञान नां होनें के कारण कह देती शान्ती चाहिये। यहां अशान्त है। क्यों कि रावण राज्य है। स्वर्ग में एक भी मनुष्य अशान्त नही होता। वहां सुख शान्ती सम्पती सब है। यहां तीनों ही नही है। अब बाप कहते है देही अभिमानी बनो। खूब पुरूषार्थ करो। मै बेहद के बाप का बच्चा हूं। बाप को याद करनें सें पापों की खाद निकल जावेगी। आत्मा सतोप्रधान बन जावेंगी। आत्मा जानती है हम कैसे 84 का चक्र लगाती हूं। अब फिर शान्ती धाम जाकर फिर सुखधाम में जावेगी। आत्मा अविनाशी है। बच्चों को अब स्मृती मिली है। हम रहने वाली शान्ती धाम की हूं। यहां आयें है पार्ट बजानें। तुम हो अहिंसक अन नोन वारीयर्स। पहला नम्बर हिंसा है काम कटारी चलाना। देवतायें निरविकारी है नां। वहां काम कटारी नही चलाते। अभी तुम अहिंसा परमो देवी देवता धर्म वाले बनते हो। वहां लड़ाई आद कुछ भी नही होता है। रावण ही नही फिर विकार कहां सें आवें। बाप समझाते है तुम आधा कल्प हार खाते हो। रावण सें। फिर मै आकर जीत पहनाता हूं। यह पढ़ाई है नां। इस पढ़ाई में ही लग जाना चाहिये। सभी आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते है। तो बाकी और क्या चाहिये। ऊंच तें ऊंच भगवान ज्ञान का सागर पढ़ा रहे है। ऊंच पद देनें लिये। मनुष्य मनुष्य की सदगती कर नही सकते है। यह सब गुरू लोग है भक्ति मार्ग के। रूहानी बाप सृष्टी के आद मध्य अन्त का ज्ञान अथवा रूहानी ज्ञान दे रहे है। बाप नालेज फुल तुम भी नालेज फुल बनते हो। नालेज इज सोर्स आफ इनकम। 21 जन्मों लिये स्वर्ग का मालिक बन जावें। यह है पुरानी दुनियां। इससें सन्यास करना है। वो सन्यासी घर बार छोड़ते है। तुम इस पुरानी सारी दुनिया का सनयास करते हो। जानते हो विनाश सामने खड़ा है। सर्वशास्त्र मयी शिरोमणी है गीता। भगवान की गाई हुई है। बाकी है सब भक्ति। जो खुद ही साधना करते है वो पूज्य कैसे बन सकेंगें? इस समय यह है पतित दुनियां। एक भी पावन नही है। बड़े -2 ऋषी मुनी सब गंगा में पाप धोनें जाते है। उनको पतित पावनी समझते है। पावन तो होतें नही है। इतना भी समझते नही पतित पावन तो परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। पानी सें कैसे पावन बन सकतें है? बाप पावन बनाते है, पतित बनाने वाले है भक्ति मार्गके गुरू। तुम ब्राह्मण बच्चे भक्ति नही करते हो। भक्ति है दुर्गती ज्ञान है सदगती। बाप कहते है मुझ बाप कोऔर वर्से को याद करो अल्फ और बे। बाप कहतेहै देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो। गाया भी जाता है परवाह थी पार ब्रहम में रहने वाले परम पिता परमात्मा की। अब वो मिल गया तो बाकी क्या चाहिये। यह है अमूल्य जीवन। तुमको नालेज भी है। नालेज मिली पद पाया फिर नालेज खत्म हो जावेगी। बाप कहते है अब मै आया हूं भारत को स्वर्ग बनाने। अब एक दो को मदद करो। घरबार सम्भालते बाप को याद करो। बाबा यह सब आपका ही है। अच्छा ट्रस्टी होकरसम्भालो। हम कहते है ममत्व मत रखो बस। श्रीमत लेते रहो तो फिर श्रेष्ट बन जावेंगे। वो है रावण मत, यह है शिव बाबा की मत। रावण द्वारा हार होती है। बच्चो। बाप जीत पहनाते है। श्रीमत पर चलो करना चाहिये। ऐसे यह बना फलो करेंगें। और